आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

1

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 21 | उदयपुर गुरूवार 15 नवंबर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पेसिफिक विश्वविद्यालय की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ...

PACIFIC UNIVERSITY

21 YEARS 1997 - 2018

HAPPY DEEPAWALI

Placements 2017-18

Satyapal Singh Ranawat
B.Tech. (ME)
₹ 15 Lac P.A.

Pranav S. Chouhan
B.Tech. (ME)
₹ 7 Lac P.A.

Harshita Iyer
B.Tech. (CSE)
₹ 4.5 Lac P.A.

पेसिफिक इंजीनियरिंग छात्रा का भारतीय सेना में चयन

Sunia Rajput
B.Tech (CE) secures AIR- 1 in SSC women entry scheme of Civil Engineering in Indian Army

Placement is Our Core Strength

International Placements

Highest Placement Package **15 LAC P.A.**

Anelia (MAURITIUS)	Putrajaya Shangri-La (MALAYSIA)	CROWNE PLAZA (New Zealand)	RODA AL BUSTAN (DUBAI)
No. of Placements - 16	No. of Placements - 09	No. of Placements - 04	No. of Placements - 06

Kamlendra S. Solanki, Charu Sharma, Shreyansh Ameta, Sudhanshu Sen, Sidhant V. Singh, Varun Kumar, Chanchal Singh, Shubham Baweja

and many more students placed in Germany, Maldives, Oman, China, Bahrain.

Placements

airtel | TATA | Reliance | asianpaints | AXIS BANK

Aditya Tiwari, Sikander Singh, Manan Gaur, Pravin Purohit, Devi Dutt Saini, Govind Singh, Dilip Damami, Harshad Dungarwal

& many more...

DEGREE WITH DIFFERENCE AT PACIFIC UNIVERSITY

- Degree with Startup.
- Active and Dedicated Incubation Center with Investment support from Angel Investors.
- Engineering degree with specialization in Data Science, Artificial Intelligence, Cloud Computing, Smart City, Renewable Energy, Engineering Design.
- Arts, Science, Law, Commerce Degree programs with competitive exam preparation.

ACHIEVEMENTS

Times Education Achievers Award (Dental, Commerce, Management, Pharmacy, Education)

Consecutive Winner (6 times) in Simulated Management Games Contest of AIMA, New Delhi held among top 270 Management Institute of the Country.

Best Engineering Campus award by eduindia

4th place in West Zone Inter University Hockey Tournament

SEMINAR & CONFERENCES

International Conference on Chemical Sciences in New Era

9th international Conference on Mapping Global Changes in Business Economy, Society and Culture

COURSES

ENGINEERING (AICTE Approved)
B.Tech. : Civil / Mechanical / Electrical / CSE / Mining / ECE
M.Tech.
Mob.: 766 501 7791

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)
Diploma : Civil / Mechanical / Electrical / Mining / CSE
Mob.: 953 036 0191

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)
Trade Diploma in Hotel Management
Diploma in Hotel Management
B.Sc. Hotel Management
Bachelor of Hotel Management & Catering Technology (BHMCT)
Master of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob.: 967 297 8016

COMPUTER APPLICATION
BCA / MCA / MCA in 2 Yrs. (Eligibility: BCA with Maths)
PGDCA, M.Sc. IT
Mob.: 958 789 2884

AGRICULTURE
B.Sc. (Hons.) Agriculture
M.Sc. Agriculture
Mob.: 992 922 2551

EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION
D.El.Ed., B.Ed.,
B.P.Ed., M.P.Ed.
Mob.: 967 297 8055

MANAGEMENT (AICTE Approved)
MBA (Dual Specialization) I **MBA** (Executive)
MBA : (Hospital Admiration)
Mob.: 967 297 8034

LAW (BCI Approved)
LL.B.,
B.A. LL.B.
B.Com. LL.B.
LL.M. (1 Yr.), **LL.M.** (2 Yrs.)
Free R.J.S coaching & other tutorial classes
Mob.: 982 985 5566

BASIC SCIENCE
(Free Coaching for Competitive Exams)
B.Sc. {Both Maths & Bio Group)
B.Sc. (Hons.) {Physics / Chemistry / Maths / Computer Science / Statistics / Botany / Zoology)
M.Sc. {Physics/Chemistry/Maths/ Computer Science/Statistics)
Mob.: 766 501 7783

YOGA
Certificate, Diploma,PG Diploma & M.Sc. in Yoga
Mob.: 766 501 7752

GYM TRAINING & MANAGEMENT
Certificate, Diploma, PG Diploma
(Personal Trainer & Gym Management)
Mob.: 823 911 0077

DENTAL (DCI Approved)
B.D.S., M.D.S.
Diploma in Dental Mechanic / Diploma in Dental Hygienist
Mob.: 766 501 7760

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES
B.A. / B.A. (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC, SSC, BANK, PO, CDS, PSI, CONSTABLE, PATWARI & CLERICAL EXAMS)
M.A. / M.S.W.
Mob.: 766 501 7753

COMMERCE
BBA: Global Business Management
(Free Educational foreign tour every year)
B.Com. I BBA (Synchronized with competitive exams)
B.Com. (Hons.) (Synchronized with CA / CS)
M.Com.
Mob.: 988 726 2020

MASS COMMUNICATION
Diploma Journalism and Mass Communication (DJMC)
BA I MA (Journalism and Mass Communication)
Mob.: 988 726 2020

DAIRY TECHNOLOGY
B.Tech. Dairy Technology
Mob.: 967 297 8063

PHARMACY (PCI & AICTE Approved)
B.Pharma
M.Pharma
Mob.: 766 501 7717

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT
B.Sc.: Fire & Industrial Safety Management
Diploma: Fire & Safety Management / Industrial Safety & Disaster Mgmt. / Health Safety & Environment
PG Diploma: Industrial Safety Management / Fire & Safety Management / Health, Safety & Environment
Mob.: 967 297 0953

FASHION TECHNOLOGY
Diploma: Fashion Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
Interior Designing
Drama / Acting / Graphic Web Designing / Modelling / Animation / Accessory Designing / Event Management / Architecture
B.Sc. & M.Sc.: Fashion Designing / Interior Designing / Jewelry Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
MBA : Design Management / Fashion Designing / Textile Designing
Mob.: 967 297 8017

RESEARCH AND DOCTORATE
M.Phil. & Ph.D. (In all the streams listed above)
Mob.: 967 297 8030

PACIFIC UNIVERSITY | Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Email : info@pacific-university.ac.in | Ph : 0294-3065000, 7665017787, 9672970940 | www.pacific-university.ac.in

दीवाली पर रूमानिया की लोककलाविज्ञा घीजेला के साथ

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

सन् 1972 की दीवाली मुझे अब भी याद है जब रूमानिया की सुप्रसिद्ध लोककलाविज्ञा तथा वहां की दी इंस्टीट्यूट ऑफ एथनोग्राफी एण्ड फोकलोर ऑफ बुखारेस्ट की प्रिंसिपल श्रीमती सुलीतेनु घीजेला के साथ रहने का सुअवसर हाथ लगा। लक्ष्मीविलास पेलेस होटल में ठहरी घीजेला को आयड़ और अलीपुरा की पुरानी बस्ती में मोमबत्ती और माटी के टिमटिमाते दीपों को देखकर अपने उधर के दीपक याद हो आये। एक माटी का दीया उसने रूमानिया ले जाने के लिए रख लिया। यहीं उसने छोटी-छोटी लड़कियों को अपने सिर पर घुड़ले के साथ नाचते देखा। मैंने बताया कि ऐसे अनेक गीत बाल-बच्चों में प्रचलित हैं। दीवाली के दिन बच्चे हीड़ गाने निकलते हैं। इनके पास एक बड़ा दीपक होता है जिसमें बिलौने एवं तेल जला रहता है। हीड़ गीत है-

आओ हंडिया रे
हिंडिया रे गांव की गौर
पाल्यां-पाल्यां दीया जगे रे जग-मग मांगे तैल
तैल तो बिलियां चाटगी रे दीया ने लेग्या चोर
डेरिया-डेरिया रे टीबां-टीबां खोज
दुस्मण व्हे तो मारद्यूं रे तुली की तलवार। आओ....।।

गीत पूरा करने पर प्रत्येक घर से बच्चों को मिठाई आदि दी जाती है। पुरुष की हीड़ बगड़ावत कथा से संबंधित होती है। उनकी हीड़ सुनने के बाद उन्हें नारियल दिया जाता है। इस अवसर पर महिलाएं भी दीवाली गीतों की झड़ी लगा देती हैं-

सोने रो म्हें दीवली घड़ास्यां रेसम बाट बटास्यांजी
चार बाट रो चौमुख दीवो घी सूं म्हें पुरवास्यांजी
चांदी रे थाल मेल म्हारो दीवलो रंगम्हेल लेजास्यांजी
मई-मई बाट सुरंग म्हारो दीवलो पीऊ रो वंश बढ़ास्यांजी।।

दीवाली के बाद ल्होड़ी दीवाली आती है जिसे 'काचणी दीवाली' भी कहते हैं।

गायों का उछव :

6 नवम्बर को नागदा सास बहू के मन्दिर देखते, एकलिंगजी के दर्शन करते हुए नाथद्वारा से पहले नाथूवास रूके जहां श्रीनाथजी की गायों का सुप्रसिद्ध खड़ग (निवास) है। जाकर देखा तो बहुत सारी गायें बड़े उछब के साथ किलोलें कर रही थीं। क्या छोटे और क्या बड़े सभी ग्वालों ने विशेष प्रकार की अंगरखी तथा टोपी धारण कर रखी थी।

अंगरखियों के पीछे हाथ का थापा दिया हुआ था। हाथ का यह छापा बहुत शुभ माना जाता है। विवाह में विदाई के अवसर पर पीळा नारेल देते समय लड़की के ससुर की पीठ पर भी इसी प्रकार का थापा दिया जाता है। यह थापा रक्षा तथा कल्याण का सूचक भी है। घरों तथा उनकी दीवालों पर भी इस प्रकार के थापे अंकित किये जाने की स्वस्थ परम्परा है।

सती के हाथ को पूज्य माना जाता है। लोकप्रतिमाओं में भी इस प्रकार का थापा पूजान्तर्गत देखने को मिलता है। दीवाली पर मवेशियों की पीठ पर भी गेरु तथा मेंहदी के थापे रचाये जाते हैं। गुजरात से लेकर बंगाल तक समूचे उत्तर भारत और मध्य भारत में हाथ की यह छाप अत्यंत शुभ मानी जाती है।

खड़ग में मुखिया ग्वाला ने हमें भीमकाय सांड तथा हथपगा पाड़ा भी बताया। कहने लगा- अब तो जानवर काफी कम पड़ गये हैं। एक समय था जब दो-दो हजार गायें यहां रहती थीं। दशरावे पर मींडों, बकरों, पाड़ों तथा सांडों की लड़ाई देखते ही बनती थी। अन्दर छोटे-छोटे ग्वाले अपने हाथों में सीदड़ा लिये गायों को खेंकरा खेला रहे थे। सारी गायें उनकी ओर जैसे मूसलाधार बरस रही थीं। इसीलिए वहां यह कहावत भी सुनने को मिली- 'गायां खेंकरे आई री है।'

गोरधन गचराने की रस्म :

इस दिन प्रातः इन गायों को श्रीनाथजी के वहां ले जाकर रमाते हैं। सभी गायों के सींगों में चांदी तथा पीतल की खोलियां पहनी हुई बड़ी ही खूबसूरत लग रही थीं। श्रीनाथजी के मंदिर में सूरजपोल की सीढ़ियों के वहां परसणा में 15-20 क्वींटल के बजन के गोबर का गोरधनजी बनाया जाता है जो ऊंचाई में आदमी के सिर तक पहुंच जाता है। फिर गायों को रमाकर उस पर कुदाई जाती है। इस प्रकार गायों द्वारा गोरधन गचराने की रस्म पूरी की जाती है। यह गोबर बाद में वैष्णव लोग ले जाते हैं। दीवाली के दूसरे दिन का त्यौहार खेंकरे के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन किसान लोग अपने खेतों पर हीड़ गाते हैं। इसे कौरवों की हीड़ कहते हैं। यह हीड़ मुख्यतः देवनारायणजी के उपासक गूजरों में प्रचलित है अतः इसे गूजरों की हीड़ भी कहते हैं। इस दिन बैल पूजे जाते हैं अतः ग्रामीण लोग 'धोल्यां को त्यौहार' भी कहते हैं। कहते हैं गोरधनजी एक समय फलां के पास झांपा के वहां सोये हुए थे कि गायों के भड़क जाने से वे कुचला गये तब से इस दिन प्रायः गोरधनजी की पूजा की जाती है।

इस दिन प्रातः गायें पूजी जाती हैं। चौपे में ग्वाला गायें भड़काने की रस्म पूरी करता है। जब सभी गायें एकत्र हो जाती हैं तो वह ऊंट के खाल से बने सीदड़े में कंकड़ डालकर उसे जोर-जोर से बजाता है। इससे गायें तितर-बितर हो जाती हैं। कुछ ग्वाले पर टूट पड़ती हैं। ग्वाला भागता रहता है। कुछ चौपे से भागती हुई नजर आती हैं। कहते हैं यदि सर्वप्रथम सफेद गाय टूटती है तो शुभ शकुन हुआ समझा जाता है और सुकाल का प्रतीक माना जाता है। यदि काली गाय टूटती है तो दुष्काल होगा समझ लिया जाता है। यह भी माना जाता है कि चौपे से भागी हुई गाय यदि अपने घर पहुंच जाती है तो उसका पहुंचना गाय-धनी के लिए शुभकारी समझा जाता है परंतु घर पर प्रायः कोईक गाय ही पहुंचने पाती है। संध्या को ग्वाला प्रत्येक गाय-धनी के घर पहुंचता है जहां उसे सरपाव दिया जाता है।

बैलों की गोला भराई :

शाम को गांव के पटेल से बैलों के गोला भराया जाता है। पहले वह चौराहे पर सभी बैलों को कतार में खड़ाकर उनके तिलक निकालता है फिर सभी के सींगों पर लच्छा बांधा जाता है। तदनंतर गूगल की धूप दी जाती है और वह धूप सबको सुंघाई जाती है। फिर सबको एक-एक हुंवाऱ्या (गुड़ मिश्रित आटे की तली हुई रोटी) तथा लपसी खिलाई जाती है फिर उनकी आरती की जाती है। यहीं इधर-उधर घूमघामकर हीड़ बोली जाती है। गूगल की तेज धूप से बैल पटकाते हैं फिर जोर-जोर से ढोल बजाया जाता है तब सारे बैल भागते हैं। इससे यह माना जाता है कि बैलों में वर्ष भर बीमारी नहीं आती है।

श्रीनाथजी को दूध-भोग से छाले :

खड़ग में ग्वाले बड़े मस्त रहते हैं। दूध का खूब सेवन करते हैं। बूढ़े मानजी सुना रहे थे कि गोरधनलालजी महाराज के वक्त में लोगों ने जाकर उनसे शिकायत की कि ग्वाले बहुत सारा दूध पी जाते हैं अतः मंदिर में पूरा दूध नहीं आता है। शिकायत सुनकर महाराज ने वहां पधारने का कार्यक्रम बनाया। सुबह ही पधार रहे थे, इतने में ग्वाले को सूचना मिली तो वह 'श्रीनाथ बाबा संभाल जो' का मंगल उच्चारण करता हुआ दूध उकलती पूरी की पूरी मटकी ही पी गया। महाराज ने आकर देखा तो वहां किसी प्रकार का दूध नहीं मिला। अतः वहां से लौट चले। लौटने पर जब मंदिर में भोग लगाने पहुंचे तो श्रीनाथजी ने प्रकट होकर कहा कि आज मैं यह भोग नहीं ले पाऊंगा। मेरे मुंह में गर्म दूध पीने के कारण छाले हो गये हैं। शिकायत पर तुम वहां ग्वालों की जांच करने खड़ग गये तो ग्वाले ने मेरा नाम लेकर पूरी की पूरी उकलती मटकी दूध की चढ़ा दी। यदि इस समय मैं वहां नहीं पहुंचता तो उसकी क्या हालत होती। यह सुनकर महाराज ने ठाकुरजी के माखन-मिसरी का भोग रखा। कहते हैं तभी से पहले माखन-मिसरी का भोग लगाया जाता है।

525 मण चावलों का अन्नकूट :

अन्नकूट के संबंध में वहां के कुछेक बूढ़े-बूढ़नों से घीजेला को मिलाया और जानकारी प्राप्त की। श्रीनाथजी की प्रतिमा के सम्मुख माणकचौक में खेतुड्ये कुम्हार घास के गट्टों का कोटा बनाते हैं। यह घास श्रीनाथजी के बीड़ों से गाड़ीबंद मणोंबंद लाई जाती है। रस्से खींच-खींच कर लगभग दस हाथ ऊंचा कोटा बनाया जाता है फिर उसमें सौ मण सीजे हुए और उन पर सौ मण बिना सीजे हुए इस प्रकार के क्रम में 525 मण चावलों की थप्पी दी जाती है। उसके चारों ओर कोरे-कोरे 50 घाघरें हलुए की, फिर उसके पास 50 घाघरें थूली की फिर साग-सब्जी, भुजिये-पापड़ी; इस प्रकार बहुत सारा भोग वहां रखा जाता है।

रात को 11 बजे करीब दर्शन खुलते हैं। दर्शनार्थियों के दर्शन करने के पश्चात मंदिर के कार्यकर्त्ता अपना नेग प्राप्त करते हैं। कुम्हार अपने पास दांतली रखते हैं जो ढेर सारे चावल को उनसे काट-काट कर नेग देते हैं। उनके नेग का चारा और रस्सा जाता है और वह भीलों के लिए खोल दिया जाता है। भील लोग सैंकड़ों की तादाद में उस जलते-बलते अन्नकूट पर चावल लेने के लिए कूद पड़ते हैं। चावल को प्राप्त करने की, एक होड़ सी मच जाती है अन्नकूट लूटने की। कहते हैं सर्वप्रथम जो भील अन्नकूट लूटकर आता है उसे सालभर के लिए भीलों का सरदार बना दिया जाता है। प्रसाद के रूप में यह अन्नकूट बहुत दूर-दूर तक जाता है। अन्नकूट को देखने के लिए रात्रि तक हमारे लिए ठहरना मुश्किल था अतः हम सायं 4 बजे उदयपुर लौट आए।

मामादेव का तोरण :

7 नवंबर को ठीक प्रातः 8 बजे ही हम लोग सुप्रसिद्ध मंदिर रणकपुरजी के लिए उदयपुर से चल पड़े। मार्ग में गोगुंदा से 7 किलोमीटर दूर (उदयपुर से 43 किलोमीटर) जसवंतगढ़ गांव की मेन रोड़ पर ही मामादेव का देवरा देखा।

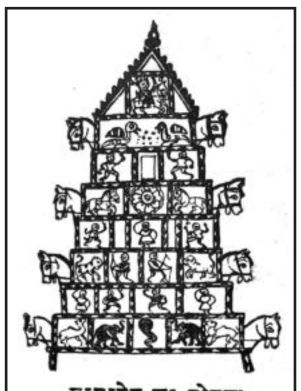

मामादेव का तोरण

इस देवरे में मामादेव की मिट्टी की प्रतिमा की जगह लकड़ी का बना हुआ लगभग चार फीट ऊंचा एक तोरण गड़ा हुआ था। यह तोरण बड़ा कलात्मक एवं मामादेव के जीवन की मुख्य-प्रमुख घटनाओं का जीता जागता काष्ठपट है। हमने कुछ समय वहां व्यतीत कर इसके चित्र लिये तथा कागजी इन्द्रेशन प्राप्त किये। घीजेला से ज्ञात हुआ कि उसके उधर भी किसी समय इस प्रकार के लोक देवी-देवताओं के प्रति लोगों की पूरी आस्था थी। जगह-जगह देवरे भी बनाये जाते थे परंतु अब ऐसी कोई चीज नहीं है। हां कहीं-कहीं खंडहर के रूप में ऐसे देवरों की झलक अवश्य देखने को मिल जाती है।

काति नहाने की कथाएं :

8 नवंबर प्रातः 6 बजे ही मैं घीजेला, भारतीय लोककला मंडल के काष्ठशिल्पी मांगीलाल मिस्त्री तथा उनकी पत्नी सायरदेवी को लेकर कृष्णपुरा स्थित देवरे ले गया जहां आठ महिलाएं मिलकर काति-गीत गा रही थीं। घीजेला ने इन गीतों की रेकार्डिंग की। उन गीतों में से एक बहुप्रसिद्ध गीत था-

हरि भणो रे भाई हरि भणो
हरि भंणता दांता टूट्या क्रोड जनम रा पाप नाट्या
किशनपुरी में कै दन बंट्या किशनपुरी में एक दन बंट्या
एकी दन रा करो सनान एकी गऊआं दीजो दान
एकी बामण भोजन कराओ एकी ने सिणगार कराओ
जयपुरी में घेवर काड़ो रतन-जतन दोई चार
वेतरणी में करो सनान सीलो देखी ने करो सनान
मीठो देखी न दीजो दान जो दीजो कंवळा रो दान
सवा पाव सोना रो दान सवा पाव रूपा रो दान
जीभ्यां वे तो आपणी अंतकाल में पापणी
लेरे जीभ्यां हरि का नाम जो पावे बैकुंठावास
बैकुंठारीपुरी री पूरी आस म्हानै टूट्यो कातिक मास।।

यही गीत सात बार किशनपुरी में 5, 10, 15, 20, 25, 30, 35 दन बंट्या के क्रम में गाया जाता है।

भजन तथा गीतों के साथ-साथ आड़ी-वाड़ी सोनारी वाड़ी नामक प्रमुख बात भी विशेष रूप से नोट की गई। यही बात थोड़े रूपांतर के साथ मैंने दशामाता की कहानियों में भी सुनी थी। कहानी थी-

'आड़ी-वाड़ी सोनारी वाड़ी। जीमै बैठा कानगुजारी। कानगुजारी कई मांगे? अन्न मांगे, धन्न मांगे, लाव मांगे, लश्कर मांगे, सांईजी रो राज मांगे, पूतां रो परवार मांगे, घोड़ा हूदी असवार मांगे, पणिहार पेली ईडोणी मांगे, जूड़ी जली रो फूल मांगे।

अतरी वात कठे वे? दशामाता री पोळ में। राड़ाजी बावजी री पोळ में। गजानंदजी बावजी री पोळ में। सूरजनारायण री पोळ में। राजा रामचंदरजी री पोळ में। तैंतीस करोड़ देवता री पोळ में। अणी पूजा कई वे? बैकुंठा रो वासो मले। आटे राम, भाटे राम। गले राम, घाटे राम। मुख में राम, जल में राम। वन में राम। परेंडे में राम। हारे राम। नानेरे राम।

रामजीऊं काम। सीताजीऊं काम। लछमणजीऊं काम। मां-बापऊं काम। कुटुंब कबिलाऊं काम। भाई भोजाईऊं काम। दुनियाऊं म्हैं कई काम नी। विसराम बावजी विसराम दीजै। दीजै सहेल्यां रो साथ। लाडू पेड़ा लापसी, जीमै दशामाता। जीमै गजानंदजी। जीमै पथवारी माता। जीमै सूरज भगवान। जीमै राजा रामचंदरजी। तैंतीस करोड़ देवता आरामऊं लाडू पेड़ा लापसी जीमै। लूंट्या बावजी लटकताई रे। आवो तपसी, जीमो लपसी। राण्या ने राज रो परवाणे केणी केवाओ पर एक कड़ावो पर एक कड़ावो एक लूंट्या ने मली। डावा हाथ रो पुन्न करी तो वो लूंट्या ने मली। डेरी मेंई ने रेई ने देई तो वो लूंट्या ने मली। हाड़ी ओड़ाई ने कापड़ो नी देई तो वो लूंट्या ने मली।'

घीजेला ने बताया कि ठीक यही परंपरा उनके उधर भी है। वहां भी इसी तरह महिलाएं प्रातः स्नान करती हैं और गीत गाती हैं। उनकी भी यही धुन चलती है। इसी तरह कार्तिक स्नान के अतिरिक्त आसोज में महिला तथा पुरुष नहाते हैं जिसे आसोजी स्नान कहते हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 नवंबर 2018

सम्पादकीय

कलाकारों के लिए पेंशन का प्रावधान

देश के विभिन्न प्रान्तों में राजस्थान कई दृष्टियों से अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहां का इतिहास वीर-वीरांगनाओं के अप्रतिम शौर्य की बेमिसाल कहानी है। भक्तिमती मीरांबाई, स्वाधीनता का प्रतापी सूर्य महाराणा प्रताप, अनिंद्य सुन्दरी रानी पद्मावती, रूण्ड के देवता कल्लाजी राठौड़, त्यागवीर चूण्डा, दानवीर भामाशाह, गढ़ तो चित्तौड़गढ़, हल्दीघाटी लगी नव-परिणिताओं का पुरुष-वेश में उत्सर्ग वाली रणभूमि हल्दीघाटी, सफेद चूहों वाली देवी करणीमाता जैसे हजारों रंग वाला प्रदेश राजस्थान पूरे विश्व में ख्यात-प्रख्यात है।

रेत के झूंपों में संगीत की लोक-लहरियों में यहां के लंगों-मांगणियारों ने अपने गायन-वादन तथा नर्तन में अतुलनीय योग दिया। बेजान की जान और बेजुबां की जुबां में काठ की कठपुतलियों ने अपने सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शनों की परम्पराओं में पूरे विश्व को पीछे धकेल प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने का बीड़ा उठाया। नटबाजों, भवाइयों, तेराताली कामड़ों, ढोलकवादकों तथा घूमर रमने वाली बाइयों ने अनेक त्यौहारोत्सवों को ललित लावण्य देकर रोशनी का रूपांकन बनाया। इसके बावजूद सरकार ने यहां के कलाकारों की कोई सुध-बुध याकि खोज-खबर नहीं ली। उनके लिए पेंशन का कोई प्रावधान नहीं बनाया।

शाकुन्तलम की संस्थापिका नृत्यशिरोमणि डॉ. शकुन्तला पंवार ने बताया कि महाराष्ट्र, गोवा जैसे प्रान्तों में कलाकारों को वहां की सरकार ने बड़ा मान-सम्मान दे रखा है किन्तु हमारी सरकार जहां अपनी कला-रंगीनियों में सबसे आगे है वहीं कलाकारों की अदब-आबरू में सबसे पीछे है। यही कारण है कि पद्मश्री प्राप्त खड़ताल वादक सिद्दीक हों चाहे बहुरूपी कला के धनी परसराम बहुरूपिया हों, देश-विदेश के संग्रहालयों में कावड़ कला का परचम देते मांगीलाल मिस्त्री हों चाहे पड़ कला की पहुंच देते पद्मश्री श्रीलाल जोशी हों, मोलेला के पद्मश्री मोहनलाल कुम्हार हों याकि भवाई को विश्व-मंच प्रदान करने वाले दयाराम हों, कठपुतली कला के विश्व विजेता तोलाराम हों याकि कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो हों, तुर्रा कलंगी ख्यालों के शहनाई वादक हरिराम हों या फिर ख्यात नड़वादक डाकू करणा भील हों; सबके सब कलाकारों ने जो कीर्तिमान हांसिल किये उनसे हम सब गर्वोन्नत हैं।

डॉ. शकुन्तला ने बताया कि संस्कृति एवं कला संरक्षण बाबत् हमारे यहां जवाहर कला केन्द्र, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, ललित कला अकादमी, ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, संगीत नाटक अकादमी जैसी संस्थाएं हैं बावजूद इसके कलाकार दर-दर के राही बने हुए हैं।

टाटा हिताची : मजबूत उत्पादों का निर्माण

उदयपुर। टाटा हिताची आधारभूत संरचना एवं उत्खनन के क्षेत्र में सतत विकास का अहम् संचालक रहा है। भारतीय कार्य परिस्थितियों में खुदाई और माल परिवहन के विश्वस्तरीय समाधान पर केंद्रित टाटा हिताची ने रास्ते में आने वाली सभी चुनौतियों का सामना किया है। टाटा हिताची ने ग्राहकों को सहयोग देने के लिए एक सशक्त वितरण नेटवर्क के माध्यम से सेवा और पार्ट्स संबंधी सहायता को प्राथमिकता दी है। इसके तहत विपणन के मुख्य कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, शाखा कार्यालय और देश के हर हिस्से में डीलरशिप कार्यरत हैं। साइट पर सहायता के कार्य में अग्रणी, टाटा हिताची सहायक समाधानों की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं। हाईड्रॉलिक एक्सकेवेटर्स में नवीनतम तकनीक पेश करने में अग्रणी टाटा हिताची ने अपने प्रोडक्ट को नए परिवेश में पहुंचा कर (माइग्रेट कर) उपकरण के स्थान से जुड़ने की ऑनलाइन सुविधा, मशीन की सेहत, देखभाल, इलैक्ट्रिकल एक्सकेवेटर, एसी ड्राइव रिजिड डम्प ट्रक के लिए ऑनलाइन स्वास्थ्य निगरानी तंत्र, स्वचालित सेंसर और अलार्म जैसे फीचर्स शामिल किए हैं।

खोज-खबर

गुरुकुल का विदाई समारोह

तब छोटीसादड़ी का श्री गोदावत जैन गुरुकुल शिक्षा का दूर-दूर तक नामी संस्थान था। कई प्रान्तों के छात्र आकर वहां विद्यार्जन करते थे। वहीं मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत ने आठवीं से दसवीं तथा मैंने नवीं तथा दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की थी। भाई साहब असाधारण प्रतिभा के होनहार धनी थे। आठवीं की मिडिल बोर्ड की परीक्षा में उन्होंने पांच विषयों में डिस्टींक्शन मार्क्स लाकर शिक्षा के क्षेत्र में नया इतिहास ही बना दिया था। यही नहीं, दसवीं की परीक्षा में कुल बीस छात्र बैठे। उनमें से केवल पांच छात्र उत्तीर्ण हुए और भाई साहब ने मेरिट में आकर पूरे क्षेत्र को ही यश-मण्डित कर दिया।

गुरुकुल में हमारे जीवन-संस्कारों की आधारशिला की दृढ़ता का जो आधार बना वह अब भी रसदार बना हुआ है। 'नमन' (1998) नामक भाई साहब की स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ में मैंने लिखा भी- हेडमास्टर नेमीचन्दजी सुराणा की सरल एवं सात्विक जीवनपद्धति, सागरमलजी बीजावत के आत्मानुशासन, राधामोहनजी पुरोहित की शैक्षणिक लोकप्रियता, गुरुदत्तजी शर्मा की अंग्रेजी अध्ययन पटुता, शोभाचन्दजी वया के धर्मजीवी संस्कार तथा कन्हैयालालजी शर्मा 'अनंत' की कविता रचनाशीलता का भाई साहब के जीवन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। गृहपति नानालालजी मट्ठा चित्त से बड़े सरल किन्तु कठोर नियंत्रण के थे। उनसे गुरुकुलीय जीवन की संस्कारशील दिनचर्या का प्रभाव यह रहा कि असाध्य बीमारी के अन्तिम क्षणों तक भी भाई साहब अपने लेखन, रचना सम्पादन तथा कविता सृजन में खोये रहे।

मुझे भी इन सबसे वे ही रचनाधर्मी संस्कार मिले। अच्छी तरह याद है जब दसवीं का विदाई समारोह (मार्च 1954) था तब भी मैंने कविता पढ़ी थी और छात्रसंघ गुरुकुल के परामर्शदाता श्रद्धेय गुरुदेव सागरमलजी बीजावत ने अपने हस्तलेख में जो साधारण कागज मुझे दिया था, मैं उसे आज भी एक अनमोल धरोहर के रूप में संभाले हुए हूं।

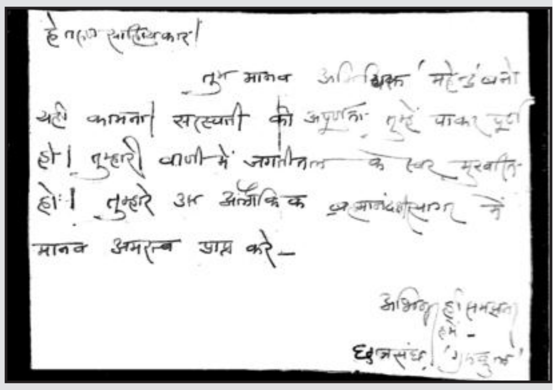

हे नवल साहित्यकार!

तुम मानव ... यही कामना। सरस्वती की ... तुम्हें पाकर पूर्ण हो। तुम्हारी वाणी में ... के स्वर मुखरित हों। तुम्हारे ... मानव अमरत्व प्राप्त करे–

छात्रसंघ, गुरुकुल

मैंने अहमदाबाद में दीवाली पर चरण वंदन के साथ जब गुरुवर बीजावतजी (91) को उस विदाई समारोह की याद दिलाई तो उन्हें आश्चर्य हुआ। मैंने कहा कि उस समय आपने जो लिखकर मेरे प्रति शुभकामना व्यक्त की थी, मैं आज भी उसके अनुरूप चलने की संवेदनशील कोशिश में हूं। भावी जीवन का रेखांकन प्रायः ज्योतिषी करते हैं किन्तु आपने अपनी अन्तरात्मा से मेरा जो भाग्यांकन किया, मैं उसे शिरोधार्य किये हूं।

बाल्मीकि कह गये तुलसी से

गोवर्धन पूजा के दिन मेरी गली में आधे मकानों के बाहर गोरधनजी बन चुके थे। कुछ का पूजन भी शुरू हो गया था कि अचानक एक मधुर स्वर सुनाई दिया। मांगणियार महिला प्रत्येक घर के बाहर बड़े ही मीठे अन्दाज में 'बाल्मीकि तुलसी से कै गया' गीत गाती जा रही थी और 'बाबूजी, बाईजी सर्दी का मौसम आ गया है, ओढ़ने को फटा-पुराना कपड़ा-ओढ़ना चाहिये' कहती कपड़े-लत्तों की मांग कर रही थी।

मेरा आकर्षण वह गीत था जिसे वह बार-बार गा रही थी। बे पढ़े लोगों की जिव्हा पर बाल्मीकि से लेकर तुलसी के राम की याद मुझे अच्छी लगी। मैं नीचे चला गया। पूछने पर उसने बताया कि वह उदयपुर की ही बस्ती बड़गांव में पिछले 50 वर्ष से रह रही है। डोकरी ने अपना नाम शान्तिबाई और उम्र दो ऊपर साठ बताई।

मैंने बताया कि तुम्हें फटी पुरानी नहीं, नई नखोर कंबल दूंगा जो किसी ने नहीं ओढ़ी है। यह सुन उसके चेहरे पर ललाई हंसी फूटी। मैंने पूछना शुरू किया। यहां से पहले कहां थी? क्या जात की हो? धंधाबंधा क्या करती हो? वह बोली भाट हूं। डोकरा मर गया। अजमेर के पास पीलवा गांव की हूं। कठपुतली नचाते हैं।

कठपुतली का नाम सुनते ही मेरी रूचि बढ़ गई। कहा कि साठेक बरस पहले नागौर का नाथू भाट इधर आया था। उसके साथ उसका छोकरा था और बहू थी जिसका नाम टोलकी था जो कठपुतली खेल में ढोलकी बजाती थी। शांतिबाई बोली, हमारे बड़ेरे भी उधर के ही हैं। मैं भी पुतली के खेल में ढोलकी बजाती हूं। खेल अमरसिंह राठौड़ का होता है।

मैंने कठपुतली के खेल सम्बंधी बहुत सी वह जानकारी दी जो उसके पास भी नहीं थी। वह बड़ी खुश हुई और बोली कि शिल्पग्राम में खेल दिखाने का बुलावा आता है तो जाते हैं। मेरे कहने पर शांतिबाई ने पूरा गीत गाया। उसे नहीं मालूम बाल्मीकि और तुलसी कौन थे और गीत बनाने वाले जिन मोहनलालजी का नाम वह बोल रही थी, वह उनसे भी अपरिचित थी।

बाल्मीकि तुलसी मोहनजी कोई हो पर वह रामायण के राम-सीता और कलयुग से तो परिचित है। शांतिबाई को मैं अधिक खोटी नहीं करना चाहता था। सुबह का वक्त उसकी आमदनी के लिए भी अच्छा जरिया था अतः ठीक समय मैंने उसे विदा दी पर रह-रहकर वह गीत मेरे से पीछा नहीं छुड़ा पा रहा था। गीत था-

बाल्मीकि तुलसी से कै गया ऐसा कलजुग आयेगा।
सुनो प्रेम से ध्यान लगाकर बुरा जमाना आयेगा।।
सासू आंगणे बहू पिलंग पर सुसरा लकड़ी तोड़ेगा।
माता बुड़िया घट्टी रे पीसे बेटा खुशी मनायेगा।।
छोटी बेन जो मांगे पैसा तुरता थपड़ लगायेगा।
छोटी साली मांगे रूपैया सौ का नोट तुड़ायेगा।।
सौ का नोट तुड़ायेगा उधारा जाकर देवेगा।
सुनो प्रेम से ध्यान लगाके बुरा जमाना आयेगा।।
जब कोई आवे बेन भाणजी ओ तरिया राब पिलायेगी।
जब कोई आवे साला सहूली हलवा पूड़ी खिलायेगी।।
बाल्मीकि तुलसी से कै गया......
मात पिता को गाली देगा तरिया लाड़ लड़ायेगी।
तिलका साधु मांगेरे भिक्षा गाली दे बतलायेगी।।
समझने वाले समझ गये मूर्खों को कौन समझायेगा।
मोहनलालजी यूं केवै के करणी का फल पायेगा।।

ठीक इसी तर्ज और भाव में मैंने बीकानेर में सन् 1957-58 में बी.ए. की पढ़ाई के दौरान डूंगर कॉलेज में पढ़ाने वाले हिन्दी-गुरु चन्द्रदेव शर्माजी से सुना था। अंतरा था- 'रामचन्द्र कह गये सिया से ऐसा कलियुग आयेगा।' यह गीत उन्हीं का लिखा उनसे ही कई बार कक्षा में पढ़ाई के दौरान और कॉलेज में विशिष्ट समारोह के दौरान भी सुना।

पूरे बीकानेर में इस गीत की लोकप्रियता परवान चढ़ी थी। बाद में यह गीत एक फिल्म का भी लोकप्रिय गीत बना।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री जन आवास योजना प्रारूप 3–ए के अन्तर्गत

पिछले 20 वर्षों से उदयपुर शहर में कई आवासीय योजनाओं के सफलतम निर्माण में निरन्तर अग्रणी आर्ची ग्रुप ऑफ बिल्डर्स लेकर आ रहे है, आर्थिक रूप से कमजोर (EWS) एवं अल्प आय वर्ग (LIG) के लिये एक अभुतपूर्व आवासीय योजना –

ARCHI'S GALAXY

तारों कि दुनिया में हो घर अपना

- राज्य सरकार द्वारा पंजीयन शुल्क में छूट
- आवंटन लॉटरी द्वारा खोले जायेंगे
- अग्रणी बैंको से ऋण सुविधा उपलब्ध
- 2.67* लाख तक की ब्याज सब्सिडी

1 BHK फ्लेट मात्र	2 BHK फ्लेट मात्र
9.91लाख में	14.91लाख में

बुकिंग से पहले सेम्पल फ्लेट जरूर देखें।

"An honest effort to change the definition of Affordable Housing"

Specifications

1. Flooring- Vitrified Tiles 600 x 600.
2. Semi Modular Kitchen with SS Sink & Granite Platform (Rajasthan Black or Equivalent Granite).
3. Windows & Sliders - Aluminium Section (Sliding).
4. Wiring - (Poly Cab/ Anchor/Vimal/KEI or Other Equivalent ISI mark Brand).
5. Switches - Modular Switches.
6. Tiles - Branded tiles upto 7' 0" in Toilets.
7. C.P. Fitting – (Cera/Hindware/Plumber or Other Equivalent Brand).
8. Sanitary ware - (Hindware / Cera or Other Equivalent Brand).
9. Doors – Both side laminated flush doors.
10. Plumbing- (Astral/ Finolex or Other Equivalent Brand).
11. Lift- (Kone/ Omega/ JOHNSON or Other Equivalent Brand).
13. Steel- TATA, Gallant, Rathi, JSW, Pollard, Kamdhenu or other equivalent brand.
14. Finishing - Sandla on interior walls.

अन्य आकर्षण

- ✓ योजना में 75: से ज्यादा खुला क्षेत्र
- ✓ 20 हजार वर्गफिट का पार्क
- ✓ बच्चों के खेलने का पार्क व मन्दिर
- ✓ ऑपन जिम, बेडमिन्टन व वॉलीबॉल कोर्ट
- ✓ लिफ्ट एवं कॉमन एरिया के लिये 24 घण्टे बिजली
- ✓ पीने के पानी के लिये आर. ओ. प्लान्ट
- ✓ शॉपिंग सुविधा
- ✓ पार्टी हॉल एवं इण्डोर गेम्स

आवेदन पत्र मिलने के स्थान –

- ✓ ग्राउण्ड फ्लोर, आर्ची अरिहन्त अपार्टमेन्ट, फोर्टिस हॉस्पीटल के पास, शौभागपुरा सर्कल, उदयपुर
- ✓ एन.एच. 76, जिंक स्मेल्टर के पास, देबारी पॉवर हाऊस के सामने, उदयपुर
- ✓ बाँठिया भवन, शक्ति नगर, मेन रोड़, उदयपुर
- ✓ राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक, 90 – बापु बाजार, जोधपुर मिष्ठान भण्डार के ऊपर, उदयपुर

*Terms & Conditions Apply

Developer:
ARCHI ARIHANT
(A Unit of Archi Group of Builders)

Ground Floor, Archi Arihant Apartment, Near Shobhagpura Circle
Shobhagpura, Udaipur (Raj.) 313001 **Office:** +91 800 359 7922, 977 222 1666
Email: archiarihant1@gmail.com, deepakg2288@gmail.com

Site Address: NH 76, Near Zinc Smelter, Opp. Debari Power House, Udaipur (Raj.)

RERA Reg. No.: RAJ/P/2018/788

For Booking: 800 359 7941, 800 359 7909, 941 449 6801, 766 551 0888, 8003597907

'खुश रहो, खुशहाल रहो' कैम्पेन लॉन्च

उदयपुर। भारत की अग्रणी वेलनेस कंपनी, द हिमालया ड्रग कंपनी ने अपना पहला ब्रांड कैम्पेन – 'खुश रहो, खुशहाल रहो' लॉन्च किया। इस कैम्पेन का उद्देश्य, 'हर घर में वैलनेस, हर दिल में खुशी' को प्रचारित करना है। द हिमालया ड्रग कंपनी के सीईओ फिलिप हेडन ने कहा कि आज हर्बल ब्रांड लोकप्रिय हो रहे हैं और ग्राहक हर्बल समाधानों को अपनी पहली पसंद बना रहे हैं। हिमालया अपने 500 से अधिक हर्बल उत्पादों के साथ उपभोगताओं का दिल जीतता आ रहा है। हिमालया ब्रांड के उद्देश्य को प्रदर्शित करने वाली हमारी पहली ब्रांड फिल्म का अनावरण करने में हमें गर्व हैं।

दिव्यांगों के लिए हाईटेक नैदानिक परीक्षण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगों पर उच्च तकनीक वाले नैदानिक परीक्षण आयोजित किए जाने की एक पहल की है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल चार दिवसीय परीक्षण के दौरान, प्रोस्थेटिक्स सर्जन और फिजियोथेरेपिस्ट निर्धन एवं वंचित लोगों के लिए मिलकर काम करेंगे। भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरू के अनुभवी और कुशल सर्जनों को अनुसंधान एवं विकास कार्य में सहायता के लिए आमंत्रित किया गया है। लगभग दस वंचित और विकलांग व्यक्तियों को पहले चरण में मायोइलेक्ट्रिक प्रोस्थेटिक्स परीक्षणों से गुजरना होगा। एक मायोइलेक्ट्रिक-नियंत्रित प्रोस्थेसिस एक बाहरी रूप से संचालित कृत्रिम अंग है जो एक मरीज की मांसपेशियों द्वारा स्वाभाविक रूप से उत्पन्न विद्युत सिग्नल के साथ नियंत्रित किया जा सकता है। सबसे पहले, अवशिष्ट अंग का एक इम्प्रेशन लिया जाएगा, इसके बाद इलेक्ट्रोड प्लेसमेंट पॉइंट्स के लिए परीक्षण किया जाएगा, फिर स्टम्प को लगाने के लिए सॉकेट बनाए जाएंगे और आखिरकार फिटमेंट तैयार होगा।

लोकानुरंजन के अनेक प्रकारों में बहुत से तो हमारे देखते-देखते ओझल हो गये और बहुत से समाप्त कर दिये गये। जो कुछ बचे हुए हैं उतने सुहाने और दिल बहलाने वाले नहीं है मगर पेट पालने और गृहस्थ जीवन चलाने की मजबूरी भी प्रमुख कारण बनकर उन्हें जीवित किये रहती है। दीवाली को कर्नाटक का कलादल शब्द रंजन कार्यालय के बाहर प्रदर्शनोपरांत।

महिन्द्रा ब्लैज़ो एक्स की पेशकश

उदयपुर। महिन्द्रा ट्रक एंड बस (एमटीबी) ने एचसीवी ट्रकों की नई श्रृंखला ब्लैज़ो एक्स की पेशकश की है। यह इसके लोकप्रिय ब्लैज़ो ट्रक्स का उन्नत रूप है। ब्लैज़ो एक्स का माइलेज ब्लैज़ो से अधिक है, इसलिये यह ईंधन की बढ़ती कीमतों से परेशान ट्रांसपोर्टर्स की समस्याओं को दूर करने में कारगर होगा और यह 'अधिक माइलेज पाओं या ट्रक वापस करो' की अनूठी एवं बेजोड़ माइलेज गारंटी देता है। महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लि. में ऑटोमोटिव सेक्टर के प्रेसिडेन्ट राजन वढेरा ने कहा कि नये ब्लैज़ो एक्स में कई सुधार किये गये हैं। ब्लैज़ो एक्स ऐसे समय पर लॉन्च हुआ है, जब ईंधन के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। नई ब्लैज़ो एक्स सीरीज सभी प्लेटफॉर्म्स में उपलब्ध होगी, जैसे हाउलेज, ट्रैक्टर-ट्रेलर और टिपर और इसमें ब्लैज़ो की बेहद सफल फ्यूलस्मार्ट टेक्नोलॉजी मौजूद है।

दीवाली पर शाकुन्तलम् संस्था द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत का सम्मान करतीं संस्थापिका डॉ. शकुन्तला पंवार तथा सचिव गोवर्द्धन पंवार।

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC www.jrnrvu.edu.in

प्रतापनगर उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोन : 0294-2492441 फैक्स : 0294-2492440

प्रतापनगर परिसर -

डिपार्टमेन्ट ऑफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी
• MCA • M.Sc. (Computer Science) • PGDCA • BCA

डिपार्टमेन्ट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी
• Diploma - सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग

इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज (साहित्य संस्थान)
• M.A. - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
• PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology) • सर्टिफिकेट कोर्स-फ्रेंच/जर्मन लेंग्वेज

उदयपुर स्कूल ऑफ सोशियल वर्क
• MSW • पी.जी. डिप्लोमा-HRM • NGO मैनेजमेन्ट

जन शिक्षण और विस्तार कार्यक्रम निदेशालय

डिपार्टमेन्ट ऑफ फार्मेसी
• DIPLOMA IN PHARMACY

फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज (एफ.एम.एस.)
• MBA • MHRM (MBA-HRD)

सिटी परिसर -

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय
कला (Arts) संकाय
• बी.ए. • एम.ए.- अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, राजनैतिक विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र
• सर्टिफिकेट कोर्स-प्रोफेशियेन्सी इन इंग्लिश एवं कम्युनिकेश स्किल

वाणिज्य (Commerce) संकाय
• बी.कॉम, एम.कॉम, सर्टिफिकेट कोर्स इन टेली ईआरपी 9.0, एकाउन्टिंग टेक्नीशियंस

बी.एड. (B.Ed.) संकाय
• बी.ए.-बी.एड. • बी.एस.सी.-बी.एड.

डबोक परिसर -

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन
लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डबोक
• एम.फिल. • एम.एड. • एम.ए. (एजुकेशन) • बी.एड. • बी.ए.-बी.एड. (इंटीग्रेटेड)
• बी.एड. (बाल विकास) • डी.एल.एड. • एम.पी.एड. • बी.एड.-एम.एड (इंटीग्रेटेड)

कन्या महाविद्यालय, डबोक
• B.A. • B.Com. • B.Sc. • M.A. • M.Com

आर.वी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, डबोक
• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (BHMS)

डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजियोथेरेपी
• मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी • बेचलर ऑफ फिजियोथैरेपी

शारीरिक शिक्षा विभाग
• मास्टर इन फिजिकल एजुकेशन • MA (YOGA Education)

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज
• B.Sc. (एग्रीकल्चर)

सिटी परिसर -

विज्ञान (Science) संकाय
• B.Sc. - Botany, Zoology, Chemistry, Mathematics, Physics, Computer Science, Statistics,
• M.Sc. Chemistry (Specialization in Inorganic, Organic, Physical, Industrial)

ज्योतिष एवं वास्तु संस्थान
• एम.ए. पाठ्यक्रम भारतीय ज्योतिर्विज्ञान, डिप्लोमा पाठ्यक्रम भारतीय ज्योतिष, डिप्लोमा पाठ्यक्रम भारतीय वास्तु, डिप्लोमा पाठ्यक्रम भारतीय पूजा पद्धति व कर्मकाण्ड, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम ज्योतिष, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भारतीय वास्तु, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम हस्तरेखा, स्नातक के लिये सामाजिक एवं मानविकी संकाय में वैकल्पिक विषय में ज्योतिष विषय है।

सायंकालीन महाविद्यालय
• बी.ए. : मनोविज्ञान, शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, म्यूजिक, बी.कॉम, बी.लिब., एम.लिब.
• एम.ए. : म्यूजिक, योग शिक्षा
• बी.एड. स्पेशल, पी.जी. डिप्लोमा इन योग शिक्षा, पी.जी. इन गाइडेंस एण्ड कांउसलिंग

डिपार्टमेन्ट ऑफ बिजनेस मैनेजमेन्ट स्टडीज, फोन : 0294-2413029, 9460022300
• बी.बी.ए. • एम.आई.बी. • मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट
• पी.जी. डिप्लोमा-ट्रेनिंग एवं डवलपमेन्ट

डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ
• B.A. • L.L.B. • L.L.M. • PGDLL • PGDCL • PGDLFS

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) एवं कुल की ओर से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

स्मृतियों के शिखर (63) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चंवरी की धुंआ से जीवनान्ध हुई चन्दरी बुआ

साठ से भी अधिक वर्ष हुए, अपने गांव कानोड़ की दास्तां मुझे आज भी चन्दरी बुआ की स्मृति से मुक्त नहीं करती है। अब भी बुआ के जीवन को अपने में जीकर बुआ के दुख का हिस्सा बनता हूं। बुआ, जहां आज तेरापंथियों का नोहरा है, वहां रहती थी। अपनी जमीन नोहरा निर्माण के लिए देकर उसने अपनी दुखी जिन्दगी में सुख का छोटा सा छींटा लिया था। फिर मेरे घर के ओवरे में वह रहने लगी। समाज उसका किराया दो रुपया माहवार भी बमुश्किल दे पाता था।

विधवाओं में दो माऊ - बेरा माऊ और हेंका माऊ। बेरा माऊ सफा बेहरे थे। दस वर्ष पति का सुख भोगा और रंडवा गये। हेंका माऊ की कमर झुकी हुई और दोनों पांवों की छह-छह अंगुलियां। दो मासी में एक गब्बू मासी जब देखो तब ही घूंघट में मिलती। घर में अकेली होने पर भी कभी मुंह नहीं उघाड़ा। डेलू मासी का नानपणा ऐसा कि तीन बच्चों के लालन-पालन के लाले पड़ गये। जाड़ी मामी का मोटा डील और महा आलसी। पानी भी कोई लाकर पिलाए नहीं तो प्यासी मरे। बातों की लपारसी। खुद तो कुछ करे नहीं, दूसरों को भी बातों में लगा दे कि चूल्हे पर रखा दूध ही नहीं, तपेली तक काली कलूटी हो जाय।

धापूड़ी के आकास्ये पर ऐसी एक दर्जन तपेलियां धूल खाती मिलीं। दो बुआ में भूरी बुआ की किस्मत देखो, बिचारी के तेरह टाबर हुए मगर एक भी नहीं बचा। समझेबुझे ने बताया कि बुआ की पीठ के नीचे संपणी उभरी थी जिसने सब का भख ले लिया। चंदरी बुआ का भाग तो इन सबसे खोटा रहा जो चंवरी का धुआं भी नहीं ले पाई और रंडवा गई।

डूंगाबा के लम्बी सफेद दाढ़ी। उनके घर के ताणिये वाले किंवाड़ से भीतर का सबकुछ दिखाई देता। उनके एक अबलकी रंग का घोड़ा था जो जब तक रहा, फोड़ा देता रहा। एक बार एक वेरबला (बिज्जु) उनके परींडे में जा घुसा जो बड़ी मशक्कत के बाद निकला। जीत्याबा छोटी थड़ी के सीधेसादे मनख थे। न अरी में न बरी में। सिर पर बालों के तीन पट्टे रखने वाले वे बा बड़े शकुनी थे। उनके शकुन लेने कोई न कोई आता रहता।

एक गागूबा थे जो मेरे घर के सामने वाली मेड़ी में रहते थे। उनकी एक आंख में फूला था। वे गेंडे के मूठ वाली करवरीदार लकड़ी के सहारे चलते थे। उनके चरकली नाम की एक लड़की थी जिसके डूंटी (नाभि) की जगह मोटा डूंटा था। वह भींत चाटती और कई बार मेड़ी की दीवाल के लेवड़े (मिट्टी की परत) उतार खाती रहती।

सात विधवाएं तो मेरी पिरोल में ही रहतीं। मेरे घर के सामने बेरा माऊ के साथ उनकी मोट्यार बहू रहती जो कम उम्र में रंडवा गई थी। हम उन्हें काकी कहते। दोनों सास-बहू कातने-पीसने की मजूरी कर पेट पालती। उनके पास सोरमी जीजां की मां रहती। उन्हें हम मोटा काकी कहते। वह भी ओछी उम्र में रंडवा गई थी। हमने काका को नहीं देखा। कोने पर मांगू की मोटी बाई रहती। वो कटोरी में पानी लेकर उसमें करवरी वींटी डूबो-डूबो आंख का घोखा निकालने में प्रवीण थी। डेलू मासी मेरी मां थी। सब छोटे-मोटे की जबान पर उसका डेलू मासी नाम सुन मुझे अच्छा लगता और कभीकभाक में भी डेलू मासी कहकर खुश होता। कभी-कभी डूंगाबा की बहिन आ जाती। उसे हम चुन्नी बुआ कहते। पास के डूंगले में वह परणाई गई थी। एकबार तो मां वहां भी उनके घर मुझे मिलाने ले गई थी।

मां को हम 'बाई' कहते और बड़ी बहिन को 'जीजां।' डूंगला हमारी मासी का घर था। उसका घर भरातरा। पांच तो एक जैसे खाते-पीते, दिखते-दिखाते उनके जाये थे। सबके गांवड़ा, यानी पास के गांवों में वजण, लेन-देन। सबके पास ऊंट। खूब कमाते और एक से एक बढ़-चढ़कर रंगदार रौबदार मस्ती भरे मन वाले। मूंछों पर ताव देते, अपनी मरोड़ के, मसखरी बिखेरते स्वभाव वाले।

हम मां के साथ वहां महीना-महीना रहते। खूब खाते-पीते। सब हमें अछन-अछन रखते। मेरे बड़े भाई डॉ. नरेन्द्र जिन्हें 'दादाभाई' कहते, के विवाह में पांचों भाई ने अपने ऊंटों के साथ विवाह का जो रंग जमाया और सजेधजे रूप में वींद गोठ के बाद पूरे गांव में जो सवारी निकाली, वैसी आज तक नहीं देखी गई। सब कहने लग गये कि सगे भाइयों से भी वधोतर, मासी-बेटे भाइयों ने मिलकर नानपणे के दुख को हजार गुने सुख से रतन-जतन कर दिया।

कभी-कभी मां मुझे अपनी नानी के घर ले जाती। वह बारले सेर रहती थी। वह छोटी थड़ी की झुकी हुई कमर लिए टगर-टगर चाल चलती। उसके दो ओवरे थे। उनके बाहर एक मोटा कोठा था जिसमें दूध-दही-घी की जावणियां रहतीं। तीन गायें थीं। जब वे ब्याहतीं तब उस दूध की वो बरी जमाती, दिन भर हम उसी का भोजन करते। मामी अंधी थी। कहते हैं मामा कच्ची उम्र में ही चल बसे थे। चार सगी बुआ थी मेरे। तीन को मैं नहीं देख पाया। चौथी का नाम भूरी था। हम उन्हें भूरी बुआ कहते। जब भी मिलता, सोचता इनका रंग भूरा नहीं होने पर भी इन्हें भूरी क्यों कहते हैं। किसी से पूछने की हिम्मत नहीं हुई पर जब मां मुझे पास के भूराबा की दुकान से सुई, धागा, चारोली, पूरबी दाणा, मीठा रंग, सिंदूर, सुपारी जैसी चीजें लाने को कहतीं तब जाना कि भूरा-भूरी नाम होता है।

मुझे इन सबमें चंदरी बुआ की स्मृति ही ताजगी दिए है। चंदरी बुआ का तन वैधव्य के अभिशाप जैसा ही कालिमा लिए था। काला ओढ़ना, काला घाघरा और लम्बी बाहों वाली काली कांचली। पति की मृत्यु का सदमा उसे सहा नहीं गया। हर पल उसने आंसू का ही जीवन जिया। इतने आंसू के कारण उसकी आंखें सूखकर अंधत्व को प्राप्त हो गई। उसकी पलकों के बीच नदी के दोनों किनारों की तरह मोटे धागे जैसे जाले का जड़ाव इस कदर आवेष्ठित था जैसे जेल की शिकंजों में किसी शातिर कैदी को बंद कर रखा हो। वे पलकें कभी खुली नहीं। प्रकाश पर अंधेरे का ग्रहण तो मैंने अनेक बार देखा पर अंधेरे पर घने अंधेरे के घोर वैधव्य का ग्रहण यहीं देखा।

चंदरी बुआ उस प्रोल में नीचे ओवरे में रहती। ओवरे में कोई रोशनदान नहीं। कोई खिड़की नहीं। आल औलाद, भाई, गरासिया, सगे समधी भी नहीं। हांव अकेली चंदरी बुआ उस ओवरे के मोटी लकड़ी के डामरपुते किंवाड़ की सांकल भी बंद किये रखती।

कई बार फूंकाफूंकी करने पर भी चूल्हा नहीं जलता। गीले कंडों को आग नहीं पकड़ पाती सो मसर-मसर धुआं निकलता जो आखे ओवरे को धुंवास्या कर देता। चंदरी बुआ घबराती। दड़-दड़ आंसुड़े बहाती। अपने फूटे भाग्य को लेकर फफक पड़ती। वह दो चंदक्ये बनाती, छोटी कटोरीनुमा, हथेली में आने जैसे। कभी वे हांव कच्चे रह जाते तो कभी अधिक पकाई पाकर काले-पीले पड़ जाते।

वह प्रोल कभी पूरी गवाड़ी जैसी आबाद रही। बहीवाचक कभीकभाक आता तो पीढ़ियों की पोथी बांच उस असरदार आबाद रही प्रोल का जगमग बखान करता।

मरियल चूही सी चंदरी बुआ दिन को कभीकभाक बाहर निकलती और किंवाड़ के पास ही देहरी का टेका लेकर बैठ जाती। किंवाड़ को कट्ठा बंद कर नीचे वाली सांकल के ताला लगा देती। ताला कोई साधारण नहीं, दरौली का बना दस्त का ताला था। पौन फीट के करीब लम्बी तो उसकी कूंची ही थी। वह बार-बार कभी हिलाकर तो कभी खींचकर उस ताले को देखती रहती कि कहीं खुला तो नहीं रह गया। अकेली रहती हुई भी बुआ कभी अकेली नहीं रहती। वह हर समय अपने से कुछ कहती, सुनाती, बतियाती रहती। लगता वह अपने साथ पिछले कई जन्मों का बोझ ढोये है।

एक दिन मैं चुपचाप उसके पास ऐसे जा पहुंचा जैसे हवा को भी पता न लगे पर बुआ भांप गई कि कोई आ बैठा है। बोली- 'कौन?' छोटे नारियल की काचली सा उसका पोपलपापल मुंह देख मेरी हंसी फूट पड़ी। झेंप मिटाते बोला- 'बुआ, आपने कैसे जाना कि कोई बैठा है?' वह बोली- 'भीतर की आंखें बता देती हैं। सूरदास के अन्तर चक्षु खुले हुए थे सो उन्होंने जैसा जाना, कोई क्या जान पाएगा।'

मैं यह सुन अवाक् रह गया। पूछ बैठा- 'तो क्या आपको भी यह संसार दिखाई दे रहा है?' उसने बताया-'यह तो नहीं पर पिछले जन्म को तो देख ही रही हूं। जो कर्म किये थे उन्हीं का तो फल भोग रही हूं।' 'सो कैसे?' मैं पूछ बैठा। बुआ ने कहना शुरू किया- 'मेरी एक पक्की सहेली थी, हम उम्र, हम शक्ल। हम साथ-साथ रहतीं। एक दिन एक अड़भोपा आया। धन्तूरे की धुन पर उसने एक भजन सुनाया- 'करम गत टारत नांही टरै।' हम उससे अपनी गत पूछती-पूछती आपस में उलझ पड़ीं।

इस उलझन भरे रोष में सूरदास ने जैसे अपनी आंखें फोड़ीं वैसे ही मैंने उसकी आंखें फोड़ डालीं। वह अच्छे संस्कार वाली थी सो उसने किसी तीसरे कान तक इस बात की भनक नहीं पड़ने दी। 'फिर क्या हुआ?' मैंने पूछा। बोली- 'अखन कुंवारी रह उसने अपना जीवन बड़े दोरम में काटा।' 'फिर?' मैं आगे जानने को आतुर था। बुआ बोली- 'फिर क्या होना था। होना तो इस जनम में मेरा लिखा था सो चंवरी का कलंक लगा और सुख का तिनका ही नहीं देखा।'

चंदरी बुआ के ओवरे में काले किंवाड़ का भंडारिया था। उसमें रखे भरतिये में चांदी के चित्तौड़ी रुपये थे। बुआ उन्हें बार-बार गिना करती। गिनने की खनक कई बार मैंने भी सुनी। वे सिक्के ही उसकी मूल पूंजी थे।

अपने दुख, दोरम तथा रंडापे को काटने के लिए चंदरी बुआ के पास अंधेरा, आंसू एवं अकेलेपन के साथ वे ढेर सारी कहानियां, गीत तथा गाळें थीं जो उसे पारंपरिक लोक से मिली थीं। ऐसी दशामाता की, काती नहाने की, थापानुष्ठानों की कहानियों का वह भंडार लिए थी। इन कथा-गीतों को वह बड़ी मधुराई से गाती।

सोनाबाई रूपाबाई की गीत-कथा वाली कहानी सुनने तो प्रति रात्रि ही हम उसे घेरे रहते। वह लेरके दे-देकर गाती-

'उतरो-उतरो ए म्हारी सोन्याबाई बेन्या /
रूपाबाई बेन्या /
ढोल नगाड़ा वाजीरया /
पनवा री वेरां टली रई।'

कहानी है-

सोनाबाई-रूपाबाई दो बहिनें थीं। सोनाबाई के सोने जैसे और रूपाबाई के रूपे अर्थात् चांदी जैसे बाल थे। एक दिन दोनों नदी पर नहाने गई। दोनों के बालों के गुच्छे नदी की धारा के साथ बहते चले। आगे उनका भाई नहा रहा था। बालों के गुच्छे देख वह बड़ा चकित हुआ और मन ही मन कल्पना कर बैठा, ऐसे बालों वाली कन्या कितनी सुन्दर और भाग्यवान होगी। वह घर आया और अपनी मां से उन बालों वाली कन्या से विवाह करने की जिद्द कर बैठा। उसे ज्ञात नहीं था कि वैसे बालों वाली एक नहीं, दो कन्याएं उसी की बहिनें हैं।

मां के लिए बड़ा संकट हो गया। बहिनों को जब इस बात का पता चला तो वे अपने आंगन में लगे चंदन के वृक्ष पर जा बैठीं और उससे कहने लगीं कि भाई जिद्द पर अड़ा हुआ है पर हमारे लिए यह असहनीय दुष्कृत्य है। अच्छा हो, कोई चमत्कार हो। तुम आकाश की ओर बढ़ते जाओ और इधर धरती फट पड़े ताकि हम दोनों उसमें समा जायें।

इस सारी स्थिति से नितांत अनजान भाई को जब पता चला कि वे बालिकाएं दो हैं और वृक्ष पर बैठी हुई हैं तो वह उनसे नीचे आने की अरदास करने लगा। भाई और बहिनों का संवाद जिन कारुणिक स्थितियों की अभिव्यक्ति देता है उसे सुन भाई के अबोधपन किंतु बहिनों की भली समझ पर कोई क्या समझेगा!

वृक्ष पर बैठी अपनी दोनों बहिनों से भाई कह रहा है- ' सोनाबाई बहन! रूपाबाई बहन! वृक्ष से नीचे उतरो। ढोल, नगाड़े बज रहे हैं। विवाह का वक्त टला जा रहा है।' दोनों बहिनें जवाब देती हैं -

'आगे तो म्हां वीरा सा केती /
अबे सायबजी कयोएनुं जाय /
वध-वध रे चंदण रा रूंख /
वध्यांई जाय,
धरती फाटे तो म्हैं धसां।'

अर्थात् अब तक हम जिसे वीरा अर्थात् भाई कहकर बुलाती थीं, अब उसे सायबजी अर्थात् पतिदेव नहीं कहा जाता। ए चंदन के वृक्ष! तुम ऊपर आकाश में बढ़ो और बढ़ते ही जाओ। यह धरती फट जाय तो हम उसमें अपने प्राण न्यौछावर कर दें। इसी प्रकार मां को सास और बावल को श्वसुर कैसे कहें जैसी गीत-पंक्तियों का रूदन तीव्रतर हो उठता है।

बुआ का ढका मुंह उसकी करुणाभरी गीतमय दास्तान से छलक मारता देख हम बच्चे भी अपने आंसू नहीं रोक पाते। हममें से कुछ तो अपनी सुबक में धारदार हो आस्तीनों से आंखें पौंछने लगते। बुआ यह सब भांप जाती तब अचानक वह अपनी सजह हंसी ऐसी बिखेरती जैसे किसी नवजात शिशु को कोई विधाता माता हंसा रही है।

मेरा वह गांव कानोड़ अभी भी है मगर वैसा नहीं रहा। प्रोल भी वैसी नहीं रही। वे नाम और वे बा-बुआ भी नहीं रहे। तब भी उस खंडहर बनी पिरोल में अपनी याददाश्तों का अर्घ्य चढ़ाने जाता हूं। अपने गांव और उस पिरोल की ममत्व भरी महकदार माटी से अपने आत्म-चैतन्य को सुगंधा बनाता हूं। उस अतीत को वर्तमान में सरजीवित कराता हूं। जननी और जन्मभूमि का कर्ज उतारता हूं। तब के आंसुओं से अब के आंसुओं की मिलनी कराता हूं। कितना ही समझूं-समझाऊं अपना मन और हिया तो धार-धार हुए बिना नहीं रहता मगर लेखनी को किस विध समझाऊं जो उस अतीत को याद करने की अरड़ पकड़े उदास धुंधलके में खो जाना चाहती है।

केसीआर इंडिया के डिस्काउंट कार्ड की लांचिंग

उदयपुर। केआरसी डिजिटल इंडिया की ओर से गुरुवार को जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार)

उदयपुर के सभी सदस्यों को केआरसी डिस्काउंट कार्ड जारी किए गए। केआरसी डिजिटल इंडिया के डायरेक्टर रामरतन डाड, नरेश नागदा व जार संरक्षक मंडल की मौजूदगी में जार के जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत को पहला कार्ड जारी किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री सुमित गोयल, शैलेष व्यास, विपिन गांधी, कपिल श्रीमाली, पवन खाब्या, अल्पेश लोढ़ा आदि मौजूद थे।

केआरसी डिजिटल इंडिया के डायरेक्टर रामरतन डाड ने बताया कि केआरसी डिजिटल इंडिया ऑनलाइन डिजिटल डायरेक्ट्री तैयार कर रहा है ताकि स्थानीय स्तर पर व्यापार कर रहे दुकानदारों को राजस्थान विश्वभर में पहचान मिल सके। डिजिटल ऑनलाइन शॉपिंग बिजनेस की वजह से परेशान हो रहे स्थानीय व्यवसाइयों व उपभोक्ताओं के बीच सेतु का काम करना है ताकि लोकल मार्केट भी अपने अस्तित्व को कायम रख सके।

इसमें एमआरपी आधारित बिजनेस आउटलेट्स से टायअप कर डिसकाउंड ऑफर दिए जा रहे हैं जिसका फायदा केआरसी डिजिटल इंडिया के एक्जीक्यूटिव क्लब मेम्बर्स को जारी किए गए कार्ड के माध्यम से ले सकते हैं। इसमें रेस्टोरेंट, होटल्स, फतहसागर कैफे, कपड़े, साड़ियां, गर्ल्स वियर, जेंट्स वियर, मेडिकल, कोचिंग सेंटर्स सहित कई अन्य जगह शामिल हैं। डिस्काउंट कार्ड मेम्बरशिप के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

डिजिटल डायरेक्टरी में कोई भी कर सकता है एंट्री

इस डिजिटल डायरेक्ट्री की सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें कोई भी दुकानदार खुद अपना रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन कर सकता है। पंजीकरण के बाद उसे ई-विजिटिंग कार्ड जारी किया जाएगा जिसके आधार पर वह अपने बिजनेस का परिचय विश्व में कहीं भी दे सकते हैं। एंट्री करने के लिए केआरसी डिजिटल इंडिया की वेबसाइट http://www.krcdigitalindia.com talin-dia.com के होमपेज पर लिस्ट बिजनेस को क्लिक करना होगा। इसके बाद एक फार्म खुलेगा जिसे भरने से यूजर नेम और पासवर्ड मिल जाएगा। यह पेज मिनी वेबसाइट की तरह काम करेगा। इसमें व्यवसायी अपने व्यवसाय से संबंधित दस फोटोग्राफ, एक लोगो सहित व्यवसाय की विस्तृत जानकारी डाल सकते हैं।

राष्ट्र नेतृत्व में मोदी सर्वश्रेष्ठ

उदयपुर। मोदी पर कायम है भारत का विश्वास, लोग उन्हें ईमानदार, मजबूत और सोच समझ कर फैसला लेने वाला नेता मानते हैं। यह निष्कर्ष है समाचार और स्थानीय भाषाओं में कंट्रेट मुहैया कराने वाले एप्लीकेशन, डेलीहंट के सवे 'ट्रस्ट ऑफ द नेशन' के परिणामों का। सर्वेक्षण डेलीहंट और नील्सन इंडिया के साझा प्रयासों के साथ करवाया गया। इस सर्वेक्षण में भारत और विदेशों से 54 लाख से अधिक उत्तरदाताओं ने भाग लिया। सर्वे के अनुसार 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नरेंद्र मोदी पर अधिक विश्वास व्यक्त किया। संतुष्टि व्यक्त की। पचास प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि नरेंद्र मोदी का दूसरा कार्यकाल उन्हें बेहतर भविष्य प्रदान करेगा। छतीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान सभी वर्तमान में मोदी पर विश्वास बनाये हुए हैं भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने के सवाल पर 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सबसे ज्यादा नरेंद्र मोदी पर भरोसा किया है। 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं को भरोसा है कि राष्ट्रीय संकट के दौरान राष्ट्र का नेतृत्व करने के लिए नरेंद्र मोदी सर्वश्रेष्ठ हैं। डेलीहंट के प्रेसीडेंट उमंग बेदी ने कहा कि हम सामाजिक परिवेश, स्थान, राज्य और भाषा जैसे जनसांख्यिकीय पैमानों के साथ समृद्ध, गहरे और सार्थक तथ्यों को प्राप्त करने में कामयाब हुए हैं। प्रसून बसु, नील्सन-दक्षिण एशिया के अध्यक्ष ने कहा कि हमें इस सर्वेक्षण का हिस्सा बनने में प्रसन्नता हो रही है।

गरीब बच्चों को मिठाई, कपड़े, पुस्तकें वितरित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने दीपावली पर वंचित और विशेष रूप से अक्षम बच्चों के चेहरे पर खुशी लाने का काम किया। संस्थान ने बच्चों के साथ त्यौहार मनाया और उन्हें कपड़े, मिठाई, पुस्तकें प्रदान कीं और भोजन कराया। नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल ने उदयपुर के विभिन्न गांवों का दौरा किया और वंचित और विशेष रूप से अक्षम बच्चों को 300 से अधिक किताबें, मिठाई, नए कपड़े वितरित किए साथ ही सभी को भोजन कराया। वंदना अग्रवाल ने कहा कि हम अपने प्रेरणादायक शब्दों से बच्चों के जीवन में आशा भर सकते हैं। उन्हें मानवता और ईमानदारी के पथ पर चलने के लिए प्रेरित कर सकते है। सच्चाई के साथ उन्हें जीना सिखा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि वंदना अग्रवाल असहाय, अनाथों की मदद करने के लिए तत्पर रहती हैं। पिछले 30 वर्षों में नारायण सेवा संस्थान पिछड़े, शोषित और गरीबों की मदद करने की दिशा में काम कर रहा है । आज तक संस्थान ने करीब 3.5 लाख से ज्यादा मरीजों का ऑपरेशन किए हैं।

इंटरवेंशनल रेडियोलोजी द्वारा पीलिया का ईलाज

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने इंटरवेंशनल रेडियोलोजी द्वारा पीलिया का सफल ईलाज किया है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों 62 वर्षीय महिला को कैंसर की वजह से पीलिया होने पर हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। कैंसर के कारण महिला की कीमोथेरेपी या ऑपरेशन असरकारक नहीं थे। पीआईएमएस के इंटरवेंशनल रेडियोलाजिस्ट डॉ. आर. आर. शर्मा ने महिला के उपचार हेतु केथेटर डालकर पीत निकालने का वैकल्पिक रास्ता बनाया जिसे पीटीबीडी कहा जाता है। इस ऑपरेशन के बाद पीलिया कम हो गया है। ऐसे ही तीन और मरीजों का सफल उपचार किया गया।

सपना, बचत, उड़ान कार्यक्रम पढ़ा रहा बचत, नियोजन और वित्तीय सशक्तीकरण का पाठ

उदयपुर। सपना, बचत, उड़ान कार्यक्रम बच्चों को बचत, नियोजन और वित्तीय सशक्तीकरण का पाठ पढ़ा रहा है। जिन बच्चों ने वित्तीय सशक्तीकरण के कार्यक्रम सपना, बचत, उड़ान: आर्थिक बल, हर परिवार का हक में भाग लिया, उन्हें अपनी इच्छाओं और जरूरतों के बीच का अंतर समझ आया। यह उनके लिए वित्तीय रूप से अधिक स्थिर भविष्य का रास्ता तैयार करने की ओर एक कदम है। गली गली सिम सिम (सेस्मे स्ट्रीट का भारतीय रूपांतरण) बनाने वाली सेस्मे वर्कशॉप इन इंडिया (एसडब्ल्यूआई) और मेटलाइफ फाउंडेशन ने राजस्थान, झारखंड और दिल्ली में वैश्विक मल्टी-मीडिया कार्यक्रम का भारतीय रूपांतरण पेश किया था। 3 से 8 वर्ष के बच्चों और उनके माता-पिता के लिए बनाया गया यह कार्यक्रम वर्तमान तथा भविष्य के लिए खर्च करने, बचाने तथा साझा करने के बारे में समझ-बूझकर फैसले लेने में परिवारों की मदद करता है। साथ ही यह कार्यक्रम वित्तीय सशक्तीकरण के कौशल से जुड़ी उनकी जानकारी, दृष्टिकोण एवं व्यवहार सुधारने वाली सामग्री भी प्रदान करता है।

सेस्मे वर्कशॉप इन इंडिया की उपाध्यक्ष (शिक्षा एवं शोध) इरा जोशी ने कहा कि यह जानने के लिए गुणात्मक अन्वेषण किया गया कि राजस्थान में इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के खर्च करने तथा बचाने के ज्ञान एवं जानकारी में किस प्रकार का बदलाव आया। कार्यक्रम द्वारा बचत के बारे में अभिभावकों तथा बच्चों की समझ और व्यवहार भी बेहतर हुए।

'राजन' की 'पेड़ लगाओ' कृति लोकार्पित

बाल साहित्य के उन्नयन एवं प्रसार के लिए समर्पित राजकुमार जैन 'राजन' लिखित 'पेड़ लगाओ' कविता संग्रह का लोकार्पण मध्यप्रदेश सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, उज्जैन में सम्पन्न हुआ। विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. राम राजेश मिश्र अध्यक्ष एवं बाल पत्रिका 'देवपुत्र' के संपादक डॉ. विकास दवे मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर राजन ने कहा कि साहित्य सृजन

किसी भी संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाता है। साहित्य को हमारे यहां आनन्ददाता व ज्ञानदाता माना गया है। साहित्य मनुष्य को खण्ड-खण्ड में नही, पूर्णता में देखता है। यदि हमें हिन्दी भाषा और संस्कारों को बचाये रखना है तो बाल साहित्य की आवश्यकता और महत्ता को समझना होगा और बालकों तक अधिकाधिक बाल साहित्य पहुंचाना होगा।

'पेड़ लगाओ' में 85 सचित्र सरस बालकविताएं हैं। इनमें प्रकृति के पेड़- पौधों, नदी-नालों, पशु- पक्षियों, मेलों-त्यौहारों, के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक युग से जोड़ने वाली सुंदर कविताओं के माध्यम से बालकों को राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम,, वैज्ञानिक दृष्टि व पर्यावरण संरक्षण की सीख देते हुए उन्हें जागरूक करने का प्रयास भी किया गया है।

-पारुल व्यास, उज्जैन

रेखा लोढ़ा 'स्मित' की दो पुस्तकें लोकार्पित

भीलवाड़ा में सन्दर्भ समीक्षा समिति द्वारा रेखा लोढ़ा 'स्मित' की 'सीपियाँ हड़ताल पर' तथा 'कोई कबीर से कह दो' का लोकार्पण किया गया। डॉ. रमेश 'मयंक' ने 'सीपियाँ हड़ताल पर' कृति को अंतस के दीपों से उम्मीदों की रोशनी के पथ पर एक नई शुरुआत करने वाली बताया। राजा अवस्थी ने 'कोई कबीर से कह दो' रेखा लोढ़ा की सृजन के बीज रोपित करने वाली पानीदार रचनाकार बताते हुए कहा कि हिमालय से निकलती गंगा की धारा को जैसे रोका नहीं जा सकता वैसे ही हमारे अंतस से फूटती गीतों की धारा भी नहीं रोकी जा सकती। समारोह में पुष्पा मूंदड़ा, विजय बागरी, वत्सल लोढ़ा, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' राजेन्द्रगोपाल व्यास, अजीज जख्मी, नन्दकिशोर 'निर्झर' प्रहलादचन्द्र पारीक तथा राजेन्द्र लोढ़ा ने वैचारिक अभिव्यक्ति दी।

-वीरेन्द्रकुमार लोढ़ा

हीफॉरशी को वरून और आयुष्मान का समर्थन

उदयपुर। लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत महिलाओं के सौंदर्य, शैली, ग्लैमर और उपलब्धि का जश्न मनाने का प्रतीक बन गया है। शाहरुख खान के समर्थन के बाद अभिनेता वरून धवन और आयुष्मान खुराना के साथ टीवी जगत के नकुल मेहता और मोहित मलिक ने भी लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स में हीफॉरशी को अपना समर्थन दिया है। वरून धवन ने कहा कि हम केवल सृजनात्मक उद्योग के रूप में तभी स्वस्थ और समृद्ध होंगे, जब महिलाओं की आवाज नहीं दबाई जायेगी या उनकी प्रतिभा को नजरअंदाज नहीं किया जायेगा। मैं ग्लोबल हीफॉरशी के उद्देश्य के समर्थन हेतु अपने मंच का उपयोग करने के लिए लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स की सराहना करता हूं। आयुष्मान खुराना ने कहा कि हीफॉरशी का बस एक ही मतलब है, और वह सकारात्मक परिवर्तन के लिए एकजुटता में खड़ा होना है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।